यात्रा रेखाएं

हस्तरेखाओं के माध्यम से हम जीवन के बहुत से योगो तथा होने वाली घटनाओ के बारे में जान सकते हैं. कई बार यह हस्त लक्षण दिशाविहीन व्यक्ति को दिशा प्रदान करने में सहायक होते हैं. आज हम हस्त रेखाओ के माध्यम से यात्रा के योगों के बारे में बताने का प्रयास करेगें.

विदेश यात्राओं के लिए रेखाओं का निर्दोष होना आवश्यक है. हाथ में बनी अच्छी और निर्दोष रेखाएँ यात्रा के लिए सौभाग्यवर्द्धक होती हैं. व्यक्ति इन यात्राओ से सुख पाता है.

यात्रा देखने के लिए चंद्र पर्वत का हाथ में मुख्य स्थान होता है क्योकि चंद्र जल तत्व ग्रह होता है और यात्रा करने के लिए समुद्र पार करना पड़ता है. पुराने समय में व्यक्ति वैसे भी जल यात्राएँ कर के ही विदेश पहुंचता था.

चन्द्र पर्वत पर आड़ी एवं खड़ी रेखाओं से यात्राओं का विचार किया जाता है तथा जीवन रेखा से निकलकर चन्द्र पर्वत पर पहुंचती रेखाएं या हथेली के पीछे से चन्द्र पर्वत पर आती हुई रेखाएं यात्रा रेखा कहलाती है.

यात्रा रेखाओं की शक्ति पर्वत की प्रधानता के अनुसार निश्चित की जाती है.

यदि हम चंद्र पर्वत को नीचे से ऊपर की ओर तीन भागों में बांटे हैं तो सबसे ऊपर वाला सत और बीच वाला रज और नीचे वाला तम प्रधान होता है. जो सत्व प्रधान होता है वह बौद्धिक क्षेत्र होता है. रज प्रधान क्षेत्र व्यावसायिक क्षेत्र होता है. तम प्रधान क्षेत्र शारीरिक क्षेत्र होता है. सात्विक क्षेत्र से हम कला के बारे में जानते हैं. राजसिक क्षेत्र से हम यात्रा के बारे में जानते हैं और तामसिक क्षेत्र से हम व्यक्ति की आदतों के बारे में जानते हैं.

यदि हम चंद्र क्षेत्र को दाएं-बाएं बराबर दो भागों में बांटे तो हम देखेंगे कि चंद्र पर्वत से आने वाली यात्रा रेखा यदि पहले भाग को पार कर जाए दूसरे भाग में पहुंच जाए तो ऐसी यात्रा रेखा लंबी दूरी की विदेश यात्रा देती है. रेखा जितनी स्पष्ट और

गहरी होती है उतने ही लम्बे समय तक तथा जितनी हल्की होती है उतने ही कम समय तक की विदेश यात्रा होती है.

मणिबंध से ऊपर उठकर चंद्र पर्वत तक जाने वाली रेखाओं को भी यात्रा रेखा कहते हैं.

विदेश यात्रा -----

- हस्तरेखा के अनुसार अगर कोई रेखा जीवन रेखा से निकलकर भाग्य रेखा को काटते हुए हथेली के दूसरी ओर चन्द्र पर्वत पर जाए तो विदेश यात्रा का अवसर प्राप्त होता है।
- यदि कोई रेखा निकल कर चंद्र पर्वत से गुरु पर्वत यानि तर्जनी अंगुली पर जाकर रुक जाए तो जातक विदेश यात्रा करता है ।
- चंद्र पर्वत पर मछली का चिन्ह बना हो तब भी व्यक्ति के हाथ में विदेश यात्राओ के योग होते हैं.
- यदि किसी व्यक्ति के हाथ में भाग्य रेखा नेपच्यून से शुरू होकर शनि पर पहुँच जाती है तो ऐसे व्यक्ति विदेश यात्रा करते हैं. ऐसे व्यक्ति समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करते हैं.
- चन्द्र पर्वत से चलकर भाग्य रेखा को काटती हुई रेखा ऊपर की ओर जीवन रेखा में जाकर मिले तो जातक विश्व भ्रमण करता है.
- मोटी शनि रेखा यदि मस्तिष्क रेखा पर आकर रुक जाए और मस्तिष्क रेखा के दूसरी ओर से फिर एक अन्य पतली सी शनि रेखा का पुन: आरंभ हो रही हो तब उस आयु में व्यक्ति की विदेश यात्रा होती है.
- यदि हाथ में शुक्र क्षेत्र और युरेनस क्षेत्र पर से रेखाये ऊपर की और जाती है तो जातक विदेश यात्रा करता है ।
- यदि कोई दो या अधिक रेखाये चंद्र पर्वत से ऊपर की ओर जा रही हो तो जातक निश्चित ही विदेश यात्रा करता है ।
- यदि मणिबंध से कोई रेखा निकल कर चंद्र पर्वत पर चढ़ जाये तो जातक विदेश यात्रा करता है ।
- चन्द्र पर्वत पर त्रिभुज होना भी विदेश यात्रा का योग बनाता है।

- जीवन रेखा भाग्य रेखा स्पष्ट हो और इन पर नक्षत्र, त्रिभुज, जाल आदि चिन्ह हो और चंद्र पर्वत उन्नत हो तो व्यक्ति जीवन में कई बार हवाई और समुद्री यात्राएं करता है.
- यदि किसी व्यक्ति के मणिबंध से निकलकर कोई रेखा मंगल पर्वत की ओर जाती है तो उसकी विशेष रूप की विदेश यात्रा का योग बनता है. ऐसे व्यक्ति को समुद्री विदेश यात्रा करने का सुख मिलता है
- यदि कोई रेखा शुक्र क्षेत्र से कोई रेखा धनुष की आकृति बनाते हुवे चंद्र पर्वत पर जाये और मध्यमा अंगुली के नाख़ून पर अर्ध चंद्र बना हो तो जातक पानी के जहाज से विदेश यात्रा करता है ।
- यदि मध्यमा अंगुली के नाख़ून पर अर्ध चंद्र बना हो और वह अर्ध चंद्र नाख़ून में तीन महीने तक रहे और कोई एक रेखा प्लूटो पर्वत से निकल कर अनामिका की और जाये तो जातक निश्चय ही वायुयान से विदेश की यात्रा करता है ।
- चंद्र पर्वत के ठीक मध्य में वर्ग का चिन्ह हो और भाग्य के उद्गम स्थल पर मछली का चिन्ह हो तो व्यक्ति समुद्र पार के देशों की यात्रा करता है|

कैरियर व सफलता ----

- चन्द्र पर्वत यानी हथेली के दूसरे हिस्से से कोई सीधी रेखा निकलकर शनि पर्वत यानी मध्यमा उंगली के नीचे पहुंचती है तो ऐसे व्यक्ति का भाग्योदय जन्मस्थान से दूर होता है। यह रेखा अगर शनि पर्वत पर कई शाखाओं पर बंट रही हो तो जीवन में कभी भी इन्हें धन की परेशानी नहीं होती है।
- छोटी उंगली के नीचे से बुध पर्वत के पास से कोई रेखा निकलकर सूर्य पर्वत यानी अनामिका उंगली के नीचे तक आती है तो ऐसा व्यक्ति भी जीवन में कई बार विदेश यात्रा करता है। इन्हें जीवन में आसानी से सफलता नहीं मिलती है। अपनी मेहनत और लगन से जीवन में कामयाबी हासिल करते हैं।
- चंद्र पर्वत पर स्वास्तिक का चिन्ह हो तो व्यक्ति ने केवल अपने देश बल्कि विदेशों में भी बड़ा पद और प्रतिष्ठा प्राप्त करता है|

- चंद्र पर्वत से निकलकर गुरु पर्वत तक जाने वाली रेखा यात्रा का संकेत देती है और यह यात्राएँ बहुत ही सौभाग्यशाली मानी जाती है.

प्रेम--

- हस्तरेखा शास्त्र के अनुसार यदि किसी व्यक्ति की हथेली में यात्रा रेखा चंद्र पर्वत से निकलकर हृदय रेखा में मिल जाए तो उस व्यक्ति के यात्रा के दौरान किसी से प्रेम होने का योग बनता है यही नहीं उसका प्रेम विवाह भी हो सकता है परन्तु ध्यान देने वाली बात यह है कि हृदय रेखा में मिलते समय यात्रा रेखा को किसी दूसरी रेखा ने काटा हो.
- यदि यात्रा रेखा हृदय रेखा से मिल जाये तो यात्रा में प्रेम अथवा मित्रता की भावना होती है.
- यदि किसी व्यक्ति के हाथ में सूर्य रेखा हर्षल पर्वत से शुरू होकर सूर्य पर्वत पर पहुँच जाती है तो ऐसे व्यक्ति अपनी विदेशी प्रेमिका के कारण विदेश यात्रा करते हैं.

उच्च शिक्षा--

- यदि किसी की हथेली में निर्दोष रेखा चंद्र पर्वत से निकलकर जीवन रेखा तक आती है इसके बाद भाग्य रेखा से निकलकर शनि पर्वत तक पहुंचती हो तो बेहद शुभ योग बनता है यानी कि उस जातक को उच्च शिक्षा के लिए विदेश जाने का अवसर प्राप्त होता है
- गुरु पर्वत उभरा हुआ हो और जीवन रेखा से कोई रेखा गुरु पर्वत को स्पर्श करे तो ऐसे लोग शिक्षा के लिए विदेश जाते हैं.
- मंगल पर्वत का स्पष्ट होना मेडिकल की पढ़ाई के लिए विदेश जाने का सूचक है.
- चंद्र पर्वत पर मछली का चिन्ह हो तो जातक शिक्षा के क्षेत्र में विदेशों में विशेष सफलता हासिल करता है|

व्यापार---

- बुध पर्वत उभरा हुआ हो और इस पर रेखाएं हो तो व्यक्ति व्यापार के कारण प्रायः विदेश यात्राएं करता है.
- छोटी उंगली के नीचे से बुध पर्वत के पास से कोई रेखा निकलकर सूर्य पर्वत अर्थात् अनामिका उंगली के नीचे तक आती है तो ऐसा व्यक्ति भी जीवन में बहुत सी विदेश यात्राएँ करता है। इन्हें जीवन में आसानी से सफलता नहीं मिलती है। अपनी मेहनत और लगन से जीवन में सफलता प्राप्त करते हैं।
- यदि यात्रा रेखा मस्तिष्क रेखा से मिल जाए तो यात्रा में कोई व्यापारिक समझोता होता है.
- यदि किसी व्यक्ति के हाथ में भाग्य रेखा चन्द्र पर्वत से शुरू होकर शनि पर पहुँच जाती है तो ऐसे व्यक्ति विदेश यात्रा करते हैं व विदेश में व्यापार से धन अर्जित करते हैं.
- जिस व्यक्ति की भाग्य रेखा स्पष्ट लालिमा लिए हुए हो और अपने अंतिम स्थान पर गुरु पर्वत की ओर झुक जाए तो वह व्यक्ति विदेशी व्यापार से धन अर्जित करता है.
- चंद्र पर्वत से अनेक रेखाएं निकलकर ऊपर की ओर बढ़ रही हो तथा उनमें से कोई एक रेखा सूर्य रेखा से जाकर मिले तो ऐसा जातक विदेशों में किसी बड़े सरकारी पद पर प्रतिष्ठित होता है.
- चंद्र रेखा यदि बुध रेखा से जाकर मिले तो व्यक्ति विदेश में बड़ा व्यापार करता है.
- चंद्र रेखा से चलकर कोई रेखा गुरु पर्वत तक पहुंचे तो व्यक्ति का विवाह विदेश में होता है.

सैटलमेंट (स्थायी रूप से बस जाना)----

- यदि किसी जातक की हथेली में चंद्र पर्वत से निकलने वाली कोई स्पष्ट रेखा जीवन रेखा को मध्य से काटती हुई उसके समानांतर मंगल पर्वत पर पहुंचे तो उस व्यक्ति के जीवन में लंबी विदेश यात्रा के योग होते हैं. अर्थात् ऐसे व्यक्ति विदेश में कई वर्षों तक रहते हैं

- जीवन रेखा स्वतः घूमकर चन्द्र पर्वत पर जा पहुंचे तो जातक लम्बी दूरी की यात्राएं करता है. उसका अंतिम समय भी विदेश में ही होता है.
- हथेली में जीवन रेखा दो शाखाओं मे विभाजित हो रही हो. एक शाखा शुक्र पर्वत को घेरे और दूसरी शाखा चंद्र पर्वत पर जाए तो व्यक्ति अनेक यात्राएँ करता है. यदि शुक्र पर्वत को घेरने वाली रेखा गहरी हो तब व्यक्ति यात्रा करके घर वापिस आ जाता है. यदि चंद्र पर्वत की ओर जाने वाली शाखा ज्यादा गहरी हो तो व्यक्ति विदेश में ही बस जाता है.
- भाग्य रेखा जिस स्थान पर जीवन रेखा से मिलती हो और ठीक उसी स्थान पर चंद्र पर्वत से आकर एक रेखा मिलती हो तो व्यक्ति का अधिकांश समय विदेश में व्यतीत होता है.

बहुत सी यात्राओं के योग ---

- यदि हाथ में चंद्र पर्वत पर कोई सीधी रेखा हो तो व्यक्ति अवश्य विदेश जाता है. इस रेखा के साथ यदि अन्य सहायक रेखाएं भी ऊपर की तरफ बढ़ती हुई दिखाई दें तो ऐसे लोग बहुत हवाई यात्रा करते हैं.
- यदि चंद्र पर्वत की यह रेखा बेहद स्पष्ट और लंबी हो तो व्यक्ति कई बार विदेश यात्रा करता है.
- हाथ की कलाई से चंद्र पर्वत पर जाने वाली रेखाएँ भी यात्रा होने के विषय में बताती है.
- शुक्र पर्वत से यदि चंद्र पर्वत पर कुछ रेखाएँ प्रवेश कर रही हैं तो यह यात्राओं का संकेत होता है.
- चंद्र पर्वत विकसित हो और बुध रेखा एकदम स्पष्ट हो तब भी विदेश यात्राएँ होती हैं.
- हृदय रेखा के समानांतर रेखा चल रही हो और चंद्र पर्वत पुष्ट हो तो यात्राएँ होती हैं.
- यदि कोई रेखा मंगल क्षेत्र से निकलकर जीवन रेखा पर मिलती हो और मध्यमा अंगुली के नाख़ून पर अर्ध चंद्र बना हो तो जातक जीवन में कितनी ही बार यात्रा करता है ।

यात्रा में बाधाएं-------

हाथ की दूषित रेखाएँ यात्रा से होने वाली परेशानी के बारे में बताती है. व्यक्ति की जो यात्रा अकस्मात् किसी कारण से होती है उसके लक्षण हाथ में नहीं होते हैं. यात्रा का समय शनि रेखा के मोटी अथवा पतली होने से जान सकते हैं अथवा शनि रेखा कब दूषित अथवा निर्दोष हो रही है आदि से भी यात्रा होने का समय ज्ञात किया जा सकता है. सूर्य रेखा जिस समय में उदित होती है उस समय में भी यात्राएँ होती हैं.

1 यात्रा रेखाओं पर क्रॉस, द्वीप, शाखा, बिंदु आदि होने से यात्राओं में विघ्न बाधाएं एवं दुर्घटनादि होती हैं.

2 यात्रा रेखा चन्द्र पर्वत से चलकर सही मार्ग से हटकर नीचे की और आयु रेखा में जाकर मिले तो यात्रा में दुर्घटना होती है.

3 हथेली के नीचे से आती हुई यात्रा रेखा जीवन रेखा की और जाते समय मध्य में क्रॉस चिन्ह पर समाप्त हो जाये तो जातक को पानी की यात्रा से दुर्घटना आदि होने की आशंका होती है. जातक को पानी की यात्रा से परहेज करना चाहिए.

4 यदि यात्रा रेखा पर काला धब्बा हो तो जातक को यात्रा में समस्या का सामना करना पड़ता है ।

5 कोई भी रेखा शनि पर्वत से आकर जहाँ पर आयु रेखा को काटती है उस समय यात्रा से दुर्घटना की आशंका होती है.

6 चन्द्र पर्वत से आरम्भ होकर मस्तक रेखा तक जाने वाली रेखा होने से यात्रा के कारण सिर में चोट पहुंचती है.

विदेश यात्राओं के लिए रेखाओं के अलावा तिलों का क्या प्रभाव होता हैं--

- यदि किसी व्यक्ति के मस्तिष्क पर तिल है तो व्यक्ति को मान-सम्मान मिलता है। माथे की दाहिनी ओर तिल हो तो व्यक्ति को धन का अभाव नहीं रहता है।
- यदि किसी व्यक्ति के पैर के तलवे पर या अंगूठे पर तिल हो तो व्यक्ति विदेश जाता है।
- नाक पर तिल हो तो व्यक्ति देश-विदेश में ख्याति प्राप्त करता है।
- यदि तिल दोनों भौंहों के बीच है तो व्यक्ति कई बार विदेश यात्रा करता है।
- दाहिनी भौंह के पास या दाहिनी पसली के नीचे तिल हो तो व्यक्ति व्यापार में काफी उन्नति करता है और विदेश यात्रा के योग बनते हैं।